ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

डायरी का एक पन्ना
क्लास -१०

पाठ का नाम -डायरी का एक पन्ना
पाठ २

PPT-4

पाठ व्याख्या

- सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियां जुलूस बना कर वहाँ से चलीं। साथ ही बहुत बड़ी भीड़ इकठ्ठी हो गई। बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ी थी ,उसने फिर डंडे चलने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज्यादा होने के कारण ज्यादा आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और करीब 50 -60 स्त्रियाँ वहीँ मोड़ पर बैठ गई। पुलिस ने उन्हें पकड़कर लालबाजार भेज दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बड़ा ,जिनका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थी। उनको बहू बाजार के मोड़ पर रोका गया और वे वहीँ मोड़ पर बैठ गई। आसपास बहुत बड़ी भीड़ इकठ्ठी हो गई। जिस पर पुलिस बीच - बीच में लाठी चलती थी
- यहाँ पर लेखक स्त्रियों की बहादुरी का वर्णन कर रहा है)
  सुभाष बाबू को भी पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई। कुछ समय के लिए लगा की पुलिस ठंडी पड़ गई है अब लाठी नहीं बरसाएगी परन्तु पुलिस बीच-बीच में लाठियाँ चलाना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते-आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड़ पर बैठ गई। उनके आसपास बहुत बड़ी भीड़ इकठ्ठी हो गई थी। जिन पर पुलिस बीच -बीच में लाठियाँ चलाया करती थी।
  इसे प्रकार करीब पौने घंटे के बाद पुलिस की लारी आई और उनको लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को पकड़ा गया। वृजलाल गोयनका जो कई दिन से अपने साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी अपने साथ था ,पकड़ा गया। पहले तो वह डंडा लेकर वन्दे -मातरम बोलता हुआ मोनुमेंट की और इतनी जोर से दौड़ा कि अपने आप ही गिर पड़ा और उसे एक अंग्रेज़ी घुड़सवार ने लाठी मारी फिर पकड़ कर कुछ दूर लेजाने के बाद छोड़ दिया। इस पर वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और वह पर भी उसको छोड़ दिया। तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार गया और वहां पर गिरफ्तार हो गया

पाठ व्याख्या

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- इस बार पुलिस की लारी करीब पौने घंटे बाद आई और उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया। वृजलाल गोयनका जो कई दिनों से लेखक के साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी लेखक के साथ ही था, वह भी पकड़ा गया। पहले तो वह खुद ही झंडा लेकर वन्दे-मातरम बोलता हुआ स्मारक की ओर इतनी तेज़ी के साथ दौड़ा की खुद ही गिर गया और इस पर एक अंग्रेज घुड़सवार ने उसे लाठी मारी और फिर पकड़ लिया, कुछ दूर तक ले जा कर फिर उसे छोड़ दिया। इसके बाद वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया ,वहाँ पर भी पकड़ा गया परन्तु वहाँ भी उसे छोड़ दिया गया। इस पर भी वो नहीं माना और दो सौ लोगो के जुलूस के साथ लालबाज़ार पहुंच गया और वह गिरफ्तार हो गया।
- मदालसा भी पकड़ी गई थी। उससे मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा था। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गयी थी। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ्तार नहीं की गई थी। करीब आठ बजे खादी भण्डार आए तो कांग्रेस ऑफिस से फ़ोन आया कि यहाँ बहुत आदमी चोट खा कर आये हैं और कई की हालत संगीन है उनके लिए गाड़ी चाहिए। जानकीदेवी के साथ वहां गए ,बहुत लोगो को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख और फ़ोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक 67 वहाँ आ चुके थे। बाद में तो 103 तक आ पहुंचे।
  संगीन - बहुत गंभीर

पाठ व्याख्या

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलाकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ़्तार नहीं किया गया था। करीब आठ बजे खादी भंडार आए तो वहाँ कांग्रेस ऑफिस से फ़ोन आया की वहाँ पर बहुत सारे आदमी चोट खा कर आये हैं। और कई की हालत तो बहुत गंभीर बता रहे थे। उनके लिए गाड़ी मँगवा रहे थे।लेखक और अन्य स्वयंसेवी जानकी देवी के साथ वहाँ गए तो देखा बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।
- अस्पताल गए, लोगो को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहंचे और जो लोग घरों में चले गए ,वो अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल जरूर हुए है। पकडे गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चला। पर लाल बाजार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धूल गया और लोग सोचने लग गए कि यहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है।

पाठ व्याख्या

- जब लेखक और अन्य स्वयंसेवी अस्पताल गए, तो लोगो को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुंचे थे और जो घरों में चले गए उनकी गिनती अलग है। इस तरह लेखक और अन्य स्वयंसेवी कह सकते हैं कि दो सौ आदमी जरूर घायल हुए। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चल सका। पर इतना जरूर पता चला की लालबाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। इतना सबकुछ पहले कभी नहीं हुआ था ,लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले किसी ने नहीं देखा था। बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है। आज ये कलंक काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे कि यहाँ पर भी स्वतंत्रता के विषय में काम किया जा सकता है।

गृहकार्य

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- 1-कौन घोषणा पढ़ रही थी और क्यों ?
- 2-लालबाजार लाकप में किसको भेजा गया ??
- 3-जुलुष कहाँ टूट गया ?
- 4-बिमल प्रतिभा कौन है ?
- 5--पुलिस की लॉरी कब आई ?
- 6--किसको नौ बजे छोड़ दिया गया ?
- 7-किसके नाम पर कलंक था ?
- 8-किसको लाल बाजार भेजा गया ?
- 9-बहुत आदमी घायल क्यों हुए ?
- 10-विमल प्रतिभा कौन है ?
- 11-पुलिस की लॉरी कितने बजे आई ?
- 12-कौनस दिन कलकत्ता बसियों केलिए कलंक था ?

•

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP